पंख न मोड़नेवाला राग

तेलुगु मूल

आदूरि सत्यवती देवी

हिन्दी अनुवाद

पारनन्दि निर्मला

पंख न मोड़नेवाला राग
श्रीमती आदूरि सत्यवती देवी की कविताओं का
हिन्दी में अनुवाद

Pankh Na Modnewala Raag
Telugu Poems of
Smt. Aduri Satyavati Devi
D.No. 50-52-2,
Seetammadhara,
Visakhapatnam-530 013 (A.P.)
Ph: 0891-2536741

Translated by
Smt.Paranandi Nirmala,
MigII/100,sector-6,
MVP colony,
Visakhapatnam-17 (A.P.)
Phone No: 0891-2504986

Cover Design : Seela Veerraju

Publication:
Amma Publication,
MigII/100,sector-6,
MVP colony,
Visakhapatnam-17. (A.P.)
Phone No: 0891-2504986

First Edition:
Vijaydashami - 2007

Printed by :

Sai Offset Printers,
Visakhapatnam.
Cell: 99488 41531

Price: Rs. 100/-

पंख न मोड़नेवाला राग

तेलुगु मूल

श्रीमती आदूरि सत्यवती देवी

हिन्दी अनुवाद

श्रीमती पारनन्दि निर्मला

प्रकाशक

अम्मा प्रकाशन

विशाखापट्टणम

समर्पण

जननी–जनक को जिन्होंने मुझे भौतिक शरीर देकर, शिक्षा–दीक्षा और संस्कार ही नहीं दिये अपितु कुछ लिखने योग्य बनाया। उनके चरण कमलों में विनयपूर्वक इस पुस्तक को समर्पित करती हूँ।

अनुक्रम

उपहार	– 09
जब जड़ विलाप करते हैं	– 10
बच्ची से बाटाँ हुआ बचपन	– 11
बूँद का फूल	– 13
न जाने तुम कहाँ-कहाँ रहते हो	– 14
विदाई गीत	– 16
काव्य स्पर्श	– 17
झरने के गीत का विमोचन	– 19
तुम ही ज्योति बन कर फैलो	– 20
दीपों के तोरण का चलनोत्सव	– 21
प्रदूषण	– 23
मैं	– 25
हजारों पंखों वाला कबूतर	– 26
महत्वाकांक्षा	– 28
कवित्व का पता	– 30
फिर इसी तरह	– 31
एक सूर्य के स्पर्श करने के उपरान्त	– 33
आसमान के नीचे	– 34
आदम कद आदमी	– 36
पेड़-पक्षी	– 37
अंकुर	– 38
भीमिली का समुद्र	– 39
आरंभिक शिक्षा	– 40
सौन्दर्य लहरी	– 41
तुम और मैं	– 43
बात के मनुष्य बन प्रवाहित होते समय	– 44
कवित्व के शहद की बारिश में	– 46
पंख न मोड़नेवाला राग	– 47
ये थोड़े से अक्षर ही	– 48
राग को ढूँढ़नेवाला भाव	– 49
जल की पूर्णिमा	– 51
बात में प्राण ड़ालने के समय	– 52
न जाने किसके हाथों फूले ऋतु	– 54
अदृश्य होती हुई हरियाली	– 56
चूना पत्थर चूरे की टोकरी	– 58
न जाने कितने स्वर	– 60
रोज दिखनेवाले दृश्य ही	– 62
ऐसे कितने दिन और	– 64
बातों के बंदनवारों के सामने	– 65
पिकनिक बस	– 67
वरप्रदान करनेवाला	– 68
कर्मवीर	– 71
प्रकाश का विहंग	– 72
अभिशाप या उपहार	– 74
लिपि के ज्ञात होने पर ही	– 76
सर्वदा नया रहनेवाले वाक्य के लिये	– 77
तब और उसके बाद	– 79
गुण ही वैसा है	– 80
कविता बन जाने के समय	– 81
झरने का गीत	– 82
एक हरा-भरा गीत	– 83
आधी नींद की स्थिति में	– 85
प्रतीक्षा के पर्वत	– 86
संचार वन	– 87
चाँदनी की कलियाँ	– 88
मनोज	– 90
व्याकुलता	– 91
इच्छित मार्ग	– 93
सफलता	– 95
कवित्व को आदेश देते हुए	– 97
वेदना	– 98
लौटकर हासिल करें	– 100
पानी की एक धारा	–102

* आन्ध्रप्रभा वार पत्रिका 1 अप्रैल 1992 उगादि
वचन कविता की प्रतियोगिता में दूसरा स्थान

उपहार

न आड़म्बरों की आवश्यकता है न दिखावे का
आओ सभी मिलकर एक अत्यावश्यक विषयपर चर्चा करें।
बात हृदयगत हो नख-शिख पर्यन्त एक स्वर वाहिनी में तिरते हुए
मनुष्यों में ममता की तरह प्रसारित होती हुई
बर्फधुली ऋतुएँ फूलों के उपवन से वन
कंदराओं से झरती हुई झरने की तरह
आइए स्वच्छता और स्नेह से प्रवाहित हो जाएँ।
कब तक गुफाओं में वर्षागमन के समय
नृत्य करते मोरों की तरह
प्रकाश पुंज की तरह उफनेंगे?
यह सच ही है----------
हाँ, यह सच है, भय अंधकार की मुट्ठियों में बंदी है।
यह बात सच है!
तो क्या हुआ?
कल के लिए एक चाँदनी के सरोवर को,
तड़के छिटकी हुई उज्ज्वल चाँदनी से भरे आँगन को,
पक्षियों के कलरव को
पारिजात पुष्पों से बिछे हुए रास्ते से तिरकर आती हुई
एक मधुर लोरी को ढूंढ़कर,
फिर से जीवित करने वाले हम ही तो है।
चीते का आहार बने हिरणों को, हिरणों को खाते चीतों को
प्रेम से एक ही रास्ते पर ले चलने वाले महर्षि बने हम।
इस धरती को एक अनुपम शान्ति गीत का उपहार दें हम।

* आन्ध्रज्योति वार पत्रिका 10 मई 1991

जब जड़ विलाप करते हैं

स्वप्न के चिटक कर रात्रि को शोकमय बनाने पर भी
स्वर्ग के टूट-फूट कर भग्नि तंत्रि बनने पर भी
मौन वाष्प कण बनकर इतना अधिक दहकेंगे नही।
शून्य का भाप धुँआ बनकर इतना ऊपर उठा न होगा।
मौन का मौन से सामना की विचित्र टीका (व्याख्या)है
पर्दे पर एक के बाद एक सामने घूमता हुआ भविष्य दर्शन का चलचित्र
ऐसे में जबकि न निद्रावस्था हो या न जागृतावस्था
एक विचार का प्रकाश केन्द्र
एक अपूर्व सौन्दर्य नेत्र
पीछा करता हुआ, शिकार करता हुआ
प्रश्न करता ही रहता है।
भूमि के तहों के अन्दर तक घुसता चला जाता हुआ ध्वनि का प्रवाह
आकाश को निरंतर फाड़ देती हुई शक्तियाँ
निर्विराम कोलाहल
सर्वत्र फैलते हुए
तैलीय दुर्गन्ध का ऊपर उठना
कभी भी
समाज के पलकों पर छाई हुई उनिद्रा के मिठास को न छीने
बच्चों के अधोपेट में कालुष्य रूपी (प्रदूषण रूपी) लोहे
के पर्दों को न उतारें।
प्राकृतिक सौन्दर्य एवं जनजीवन के नेपथ्यों को
निगल जानेवाले
विषवायु के समूह का
अब भी इसीतरह पोषण करते हुए----पोषण करते हुए
रसविहीन हो भूमि के ढ़ह जाते हुए दृश्यों को
इतिहास के देखने तक
हाथ बाँधे बैठना नहीं चाहिए

* आन्ध्रज्योति सचित्र वार पत्रिका 14 दिसम्बर 1990

बधी से बाँटा हुआ बचपन

इसी बीच हमारे यहाँ एक बच्ची ने जन्म लिया
बच्ची को आकर देखने के लिए भेजे निमन्त्रण पत्र पाते ही
आप सभी तितलियों की तरह न जाने कहाँ-कहाँ से छोटे-छोटे
अतिथियों के साथ मिल कर आगये
उस शाम को हम सभी मिल कर बहुत सुन्दर ढ़ंग से सजाते हैं।
कोमल कली-सी हमारी बच्ची ने जन्म लेकर
न जाने किस-किस को कौन-कौन से प्रमोशन दे दिये।
रह-रह कर चोर निगाहों से उसका हमे देखना, उसकी होशियारी
का वर्णन करते हुए हम जब अघा नही रहे थे
तब सायं संध्या उनके बीच में फँस गई।
एक-एक कर तारा दीपों के तोरण जल उठे
मेघों के आवरण से चंदामामा की तरह
पारिजात का पेड़ फूलों की बारिश करता सा
आप सभी ने नन्ही बच्ची को आशीर्वाद के सुगन्ध से भर दिया
देरी होने के कारण अपने को कोसते हुए
दालमोठ भरे प्लेट, आईसक्रीम के प्याले,चॉकलेट और चाय

कोलाहल पूर्ण ध्वनि से स्वागत किया।
तब तक अनुशासन की रेखा पर
ऊमस से परेशान होते हुए बचपन रूपी चाँद
पंख खोले कबूतरों के शिशुओं की तरह चंचल हो उठते हैं।
दूर बाड़े से लगा गुलमोहर का पेड़
अपनी सुगन्ध को हवा के साथ बहा कर
अपने स्पर्श से पुलकित कर देता है।
अब हम अपनी बातचीत में
'प्यारी बच्चियों','हमारी तेलुगु माताओं' से शुरू होकर
कल परसों के संसार के समाचारों तक घूम फिर कर आजाते हैं।
सामने उछलते हुए बचपनों का कोलाहल
हमारी रीढ़ में सरकने लगता है।
एक अपूर्व बचपन शिशुगिलहरी की तरह उछलता कूदता फाँदता हुआ
आकर यादों के अमरूद पर आ बैठता है।
फिसलने की सीढ़ी से फिसलती हुई
पगचिह्नों के पीछे दौड़ लगाती हुई
डाली की गोद में कली बन संकुचित होने के दृश्य के पास आकर रुक जाता हैं।
बार-बार आगे-पीछे झूलते हुए
रस भार से लटकते हुए अंगूर के गुच्छे की तरह रूपान्तरित हो जाता हैं।
तोते के द्वारा काट खाये अमरूद का - सा बचपन
जीवन के चेहरे पर ब्यूटी स्पॉट होकर दमकते समय
कभी-कभी मन दूध की गोदावरी-सा धारों में प्रवाहित होता हुआ
जीवन के जड़ों में इस सायंकाल की तरह
प्यार से घुस जाता है
ऐसे में लोगों का जीवन्त होकर छलक पड़ना कितना अच्छा लगता है।

End of Preview.

Rest of the book can be read @
http://kinige.com/kbook.php?id=1893

* * *

Read other books of Aduri Satyavati Devi @
http://kinige.com/kbrowse.php?via=author&name=Aduri+Satyavati+Devi&id=71